एकता परिषद

राहत अभियान

21–29 मई 2020 संस्करण क्रमांक –12

एकता परिषद ने महात्मा गाँधी सेवा आश्रम के माध्यम से,जिले में देश के कई हिस्सों से लौट कर आये मजदूरों को काम देने का प्रयास किया है, इसके तहत फिलहाल साबुन बनाने की इकाईयाँ खोलने की तैयारी शुरु हो गई है। युवाओं का प्रशिक्षण विशेषज्ञ समूह के द्वारा किया जा रहा है। इस काम में जून के पहले पखवाड़े तक ही लगभग 500 लोगों को रोजगार मुहैया करा दिया जायेगा।

साबुन बनाने का प्रशिक्षण देते विशेषज्ञ

इसी प्रकार पलायन से लौटे युवकों और महिलाओं को न्युटीमिक्स बनाने का प्रशिक्षण दिया गया है जिसके माध्यम से 1000 लोगों को रोजगार से जोड़ने का प्रयास किया जायेगा।

न्यूट्रीमिक्स के पेकेट तैयार करती महिलायें

संपादकीय

भूमि आधारित ग्रामीण अर्थव्यवस्था से रुकेगा पलायन

ग्वालियर का कांसेर गांव में जिन आदिवासी परिवारों को विगत चार साल पहले उनके द्वारा काबिज वनभूमि पर अधिकार मिला था, वे सभी परिवार कड़ी मेहनत से खेती किसानी करते हैं। वर्ष में कुछ समय आस–पास के जंगलों से वनोपज इकट्ठा करके बेच देते है और बाकी समय में मजदूरी कर लेते हैं। इस गांव से पलायन करने वाले परिवारों की संख्या नगण्य है। इसी तरह की दूसरी कहानी देवगढ़ की है जहां आदिवासी परिवारों ने वनभूमि पर अधिकार के लिए दावा दाखिल किया है। सभी परिवार खेती, वन और स्थानीय मजदूरी से अपनी आजीविका चलाते हैं। किंतु यहां पर अभी उनको वनाधिकार नहीं मिला है। तीसरा उदाहरण उमरिया के मडईकलां गांव का है जहां से कोई पलायन नहीं हुआ था। मडईकला गांव के लोग कमोवेश स्वावलम्बी है और बाजार पर केवल कापी–किताब, कपड़े, दवाई और नमक के लिए ही निर्भर हैं। यहां ग्रामीणों ने एकजुट होकर ग्रामीण पर्यटन के लिए कार्य भी किया है। आखिर में महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज्य की कल्पना भी यही थी कि गांव पूरी तरह से स्वावलम्बी बने। इस व्यवस्था में परस्पर निर्भरता वाले विकास की अवधारणा में गांव को अर्थव्यवस्था की इकाई माना गया है।

आज देश में पश्चिमी अर्थव्यवस्था के अंधानुकरण ने जो आर्थिक चुनौतियां पैदा की है ऐसे समय में गांधी जी की ग्राम स्वराज्य की आर्थिक दृष्टि ही मददगार साबित हो सकती है। गांधीवादी चिंतक श्री जे.सी. कुमारप्पा इसको स्थायित्व की अर्थव्यवस्था मानते हैं। अधिक उत्पादन की बजाय उत्पादन में अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी को गांधी जी ने महत्वपूर्ण माना था। लॉकडाउन ने विकास के इस पश्चिमी मॉडल पर प्रश्नचिन्ह खड़ा किया है। जहां पर मशीनीकरण के माध्यम से अधिक उत्पादन को स्वीकारा।

प्रवासी मजदूरों की दुर्दशा से सभी लोग परिचित हैं।
देश में जिस तरह से भगदड़ मची, वह विकासीय एजेण्डे की समीक्षा की आवश्यक्ता पर बल देता है।

प्रवासी मजदूरों में वापस लौटने वाली जमात उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ, झारखण्ड, उड़ीसा की है जो भरण–पोषण के लिए तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा और पंजाब का रूख करते हैं। इन प्रवासी मजदूरों में भूमिहीनता बहुत अधिक है। सरकारी आंकडो के मुताबिक लगभग 56 फीसदी ग्रामीण परिवार भूमिहीन हैं।

एकता परिषद संगठन भूमिहीनों को भूमि देने की पैरवी करता है खासकर उस समुदाय के लिए जिनकी आजीविका का साधन खेतिहर मजदूरी और शारीरिक श्रम है। इसके अभाव में ही इन परिवारों को आजीविका के लिए अपना घर, गांव और राज्य छोड़कर दूसरे जगहों पर बिना किसी सुरक्षा के काम के लिए विवश होना पड़ता है।

खेती किसानी में पश्चिमी मॉडल, मशीनीकरण, रसायनिक खाद और जेनेटिक बीजों तथा कॉरपोरेट खेती ने अवश्य ही रोजगार को कम किया है। जिसके कारण पलायन की दूरियां बढ़ी हैं। प्रवासी मजदूरों की बदहाली ने साबित किया है कि बरसों से इतने बड़े पैमाने पर हो रहे पलायन को रोकने के लिए सरकारी स्तर पर कोई योजना या चिंताए नहीं थी। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक मध्यप्रदेश में 6.5 लाख, उत्तरप्रदेश में 16 लाख और बिहार में 15.36 लाख प्रवासी मजदूर वापस आ चुके हैं, यह संख्या इससे भी अधिक हो सकती है।

दो महीनों से अधिक के इस लॉकडाउन से भारतीय अर्थव्यवस्था को लगे झटके ने सरकार और नीति निर्माताओं को अर्थव्यवस्था के लिए नये रास्ते खोजने के लिए प्रेरित किया है। वर्तमान में स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर पैदा करने के विषय को लेकर केन्द्र, राज्य और जिला स्तर के सरकारी तंत्र, सभी परंपरागत अवसरों को नए सिरे से विकसित करने के प्रयास में जुट गए हैं।

वर्तमान प्रधान मंत्री जी का भी कहना हे कि आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ा जाये। जिसको बहुत पहले गांधी जी ने कह दिया था। कृषि क्षेत्र ही सबसे अधिक रोजगार देने वाला माना जाता है।

गांधी जी की कल्पना का भारत आज भी जीवित है। जरूरत इस बात की है कि उसके विस्तार की संभावनाओं की तलाश की जाये। प्राकृतिक संसाधनों जल, जंगल और जमीन के इर्द गिर्द स्वावलम्बी समाज की रचना के लिए एक नये सिरे से पहल की जाये। आवश्यक जरूरी बस्तुओं के उत्पादन का विकेन्द्रीयकरण किया जाये। क्षेत्र विशेष में होने वाले कृषि और वन उपजों के उत्पादन और प्रसंस्करण की छोटी–छोटी इकाईयों को स्थानीय आवश्यकता के अनुकूल प्रोत्साहन और बंजर तथा अनुपयुक्त भूमि को आजीविका केन्द्रित कृषि और वन क्षेत्र में विकसित किया जाये।

उपर में दी गयी कहानियों से सबक लेकर भूमि और वन आधारित आजीविका के टिकाउ विकास से बड़ी संख्या में स्थानीय स्तर पर लोगों को रोजगार दिया जा सकता है और पलायन को रोका जा सकता है।

कोरोना संकट की विपरीत परिस्थितियों में भोपाल टीम पहुँचा रही है जरुरतमंदो तक राहत सामग्री...

स्त्रोत–कोरोना राहत समूह

भोपाल – हबीबगंज रेलवे स्टेशन भोपाल पर गोवा से मणिपुर, त्रिपुरा, नागालैंड और असम जानेवाले 1100 यात्रियों को भोजन वितरित किया गया। भोपाल की अलग–अलग बस्तियों में 80 से अधिक गर्भवती महिलाओं को पोषण किट एवं 5 वर्ष से कम उम्र के 400 बच्चों को दूध के पैकेट प्रदान किर्ये गये हैं। इसके अलावा एकता परिषद टीम, भोपाल के विभिन्न भागों में जरुरतमंदों तक राशन किट पहुॅचा रही है।

हबीबगंज रेलवे स्टेशन भोपाल पर भोजन वितरण

गर्भवती महिलाओं को पोषण किट

बच्चों के लिये दूध के पैकेट

पलायन से लौटे 1000 से अधिक श्रमिकों को “सेव द चिल्ड्रन” के सहयोग से दिया एक माह का राशन और बच्चों को वस्त्र।

स्त्रोत–प्रसन्ना बारीक, धार

जिला धार – धार, कुक्षी और मनावर ब्लॉक के श्रमिक परिवार हजारों के समूहों में गुजरात और अन्य जिलों से वापस आ रहे हैं। ऐसा कोई भी दिन नही जाता है कि प्रवासी मजदूरों का आना न हुआ हो।

एकता परिषद की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा श्रीमति श्रद्धा कश्यप एवं महात्मा गांधी सेवा आश्रम के समन्वयक श्री प्रसन्ना जी ने 1100 ऐसे परिवारों का चयन किया जिनके पास राशन की कोई व्यवस्था नही थी। एकता परिषद टीम ने सेव द चिल्ड्रन के सहयोग से अभी तक 1000 से अधिक परिवारों तक (मनावर में 364 और कुक्षी में 636 परिवार) एक माह का राशन और हाइजीन किट प्रदान की है। इस किट में आटा, दाल, चीनी, चावल, कुकिंग ऑयल, चायपत्ती नमक , मसाले, बाथ शॉप, डिटर्जेंट शॉप, सैनिटरी नैपकिन, और मास्क है।

जिला – बड़वानी के राजपुर विकास खंड में 50 परिवारों को किट दिया गया है।

ब्रांडेड टी शर्ट पहनकर खुश हुए गरीब बच्चे

धार। कुक्षी तहसील के ग्राम कवडिया खेड़ी से लेकर अन्य कई गांव में लॉकडाउन के चलते बच्चों के कपड़े की भी दिक्कत आगई थी। ऐसे में महात्मा गांधी सेवा आश्रम के प्रसन्ना बारिक ने पीथमपुर की फैक्टी प्रतिभा सिंटेक्स से संपर्क किया। जिस पर विभिन्न अंतरराष्ट्रीय ब्रांड की टी शर्ट बनाने वाली कंपनी ने 800 गरीब बच्चों के लिए मदद की पहल की। बुधवार को उन्हे नाईक, ली और कई महत्वपूर्ण ब्रांड की टीशर्ट पहनने का मौका मिला। ● नांदुनिया

इसके अलावा विभिन्न शहरों से कुक्षी, धार में प्रवासी मजदूर आये हैं उनके 3 से 24 वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिये ली, नाइके और पेटागोनिया ब्रांड की 245 पोशाकों का वितरण किया गया है।

मजदूरों, एकल महिलाओं, निराश्रितों, और दिव्यागों को राशन वितरण

स्त्रोत–दीपक अग्रवाल, सागर

जिला सागर – माल्थोन ब्लाक में गरीब वंचित मजदूरों, वेवा महिलाओं,निराश्रितों, और दिव्यागों को एकता परिषद जिला सागर द्वारा राशन वितरण कर मदद की जा रही है,जिसमें 12 क्वंटल आटा, 120 लीटर मीठा तेल, 2 क्वंटल तूअर दाल,12–12 किलो धनिया,हल्दी,मिर्ची और 120 नमक का वितरण किया गया है। साथ ही गांव वासियो को समझाईश दी गई कि उचित दूरी बना के चले, मास्क लगाऐ, कहीं भी बाहरी वस्तु, या व्यक्ति के सम्पर्क में आने पर शरीर को साफ करे, स्नान करे, हाथ बार बार धोऐ आदि के लिए जागरूक किया गया है।

राष्ट्रीय हिन्दी मेल,खुरई

एकता परिषद ने बांटा गरीबों असहाय मजदूरो को राशन

खुरई। एकता परिषद जन संगठन इकाई खुरई द्वारा गरीब वंचित असहाय मजदूरों को सूखा राशन वितरण किया गया एकता परिषद की संयोजक दीपक भाई ने बताया कि कोराना वायरस जैसी आपदा के दौरान गरीब मजदूरों कि हालत दयनीय है जो प्रवासी मजदूर पलायन से वापस आऐ है उन कि आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर है। इस परस्थिति में एकता परिषद संगठन के द्वार महात्मा गांधी सेवा आश्रम के सहयोग से गरीबों को आटा, तेल, दाल, मिर्च, धनिया, हल्दी, नमक वितरण किया गया। जिसमें 12 कुन्टल आटा, 120 लीटर मीठा तेल, 2 कुन्टल तुअर दाल, 12-12 किलो मिर्च, धनिया, हल्दी, 120 किलो नमक पैकट का निशुल्क वितरण किया गय। साथ सामाजिक दूरी बनाने, मास्क लगाने, हाथ साबुन से धोने, बाहर से आने पर नजदीक के स्वास्थ्य केंद्र में जांच कराने के लिए समझाइश दी गई। राशन वितरण हनुमत पहाड़ी, मड़िया कौरत, पिठोरिया, बांदरी, वनहट के टपरा, जुझारपुरा, मझवन गौरी, झीकनी, मालथोन के आदिवासी बस्ती में किया गया। इस मोके पर एकता परिषद सागर संयोजक दीपक भाई कार्यकर्ता मनोज कुमार, प्रमोद, राजेन्द, शान्ति, रूपाबाई, उपेन्द आदिवासी आदि लोगो ने सहयोग किया।

जिला – सीहोर । सीहोर जिले के नसुरल्लागंज में पलायन से लोटे 7 गॉव के 60 परिवारों को राशन किट प्रदान की गई। सीहोर जिले के जिला संयोजक राकेश रतन, श्रीरामबारेला और टीकाराम बारेला आदि ने सभी गॉव जाकर निराश्रित श्रमिक परिवारों की मदद की।

जिला – डिंडोरी। जरूरतमंद बैगा परिवारों को राशन सामग्री वितरित किया गया

डिंडौरी। कोरोना महामारी के चलते और प्रशासन के द्वारा एहतियातन तौर पर लॉकडाउन लागु किए जाने से दुर्गम क्षेत्रो के लोगो का जरूरी वस्तुओ को टोटा है। वैसे इस दौर में स्वयंसेवी ,समाजिक संगठन, लोगो को मदद कर रहै है। मानव जीवन विकास समिति कटनी एवं एकता परिषद् के द्वारा डिण्डौरी जिले के विकास खण्ड समनापुर के 11 गांव पोडी, किवाड़, केवलारी, सिघंनपुरी, बम्हनी, सालीवाड़ा, छतपरा, मोहगांव, कुण्डापानी, मोहती, कुरेली, से 105 लागों को चिन्हित कर प्रभावित परिवार को चावल, दाल, तेल, हल्दी, मिर्ची, नमक, और साबुन का किट पैकिंग कर परिवार को दिया गया। एवं कोरोना संकट की इस घडी में मानव जीवन विकास समिति कटनी कोरोना महामारी से बचाव के लिए गांव गांव में अपने कार्यकर्ता टीम की मदद्द से लोगों को लगातार सोशल डिस्टेंशिंग की जानकारी दे रही है।

जिला झाबुआ – इसी प्रकार झाबुआ जिले में गुजरात से और अन्य शहरों से प्रवासी मजदूर आ रहे हैं। झाबुआ जिले की जिला संयोजिका श्रीमति दुर्गा पवार का कहना है कि वापिस आने वाले सभी मजदूरों की हम सूची बना रहे हैं, रामा बलॉक और अलीराजपुर में शीध्र श्रमदान शिविर किया जाने है जिसके लिये 120 श्रमिको की सूची तैयार की गई है जिन्हे काम के बदले राशन दिया जायेगा। हम सभी श्रमिको को मास्क वितरण कर रहे हैं।

ग्वालियर–चम्बल क्षेत्र की झुलसा देने वाली गर्मी (46*) के बीच, एकता परिषद संगठन और प्रशासन का संयुक्त राहत अभियान

जिला – शिवपुरी,श्रीरामप्रकाश शर्मा। कोलारस तहसील के धर्मपुरा गांव के 85 परिवारों को संगठन और प्रशासन के संयुक्त प्रयास से राशन वितरित किया गया।

संगठन के स्थानीय कार्यकर्ताओं के द्वारा मई

2020 के दूसरे सप्ताह में इस गांव की स्थिति से अवगत कराते हुये राशन देने संबंधी एक पत्र जिला कलेक्टर को भी दिया गया था। इस पत्र पर कार्यवाही करते हुये शिवपुरी की जिला कलेक्टर सुश्री अनुग्रह पी. ने 10 क्विंटल गेहुँ उपलब्ध कराया। संगठन के साथियों द्वारा धर्मपुरा गांव के 85 परिवारों को अनाज वितरित किया गया। इस 85 परिवारों में 45 परिवार ऐसे हैं

जिनके पास राशन कार्ड तो है लेकिन पिछले चार साल से राशन नहीं मिला। 13 परिवार ऐसे भी हैं जिनका राशन कार्ड अब तक नहीं बनाया गया। एकता परिषद के माध्यम से इन परिवारों के राशन कार्ड बनाने के लिये आवेदन दिया गया है। 15 परिवार ऐसे भी हैं जो घुमंतु जाति के है और इस गांव के पास ही रह रहे हैं जिनके पास खाने के लिये कुछ भी नहीं है। ऐसे जरुरतमंद लोगों को 10 किलो गेहुँ दिया गया।

इस प्रयास की सफलता के तुरत बाद 30 घुमंतु जाति के लोगों के लिये प्रशासन की तरफ से 4 क्विंटल गेहुँ और उपलब्ध कराया गया जिसे इन परिवारों में वितरित किया गया।

ग्वालियर–चम्बल क्षेत्र की भयंकर गर्मी को देखते हुये प्रशासन ने 250 किलो शक्कर मिला हुआ सत्तुं एकता परिषद को उपलब्ध कराया है जिसे शिवपुरी के स्थानीय कार्यकर्ताओं द्वारा वितरित किया जा रहा है। अबतक 150 परिवारों को एक–एक किलो सत्तु वितरित किया जा चुका है।

प्रशासन के अलावा एकता परिषद की ओर से भी राशन का वितरण किया जा रहा है। शिवपुरी जिले में धर्मपुरा की तरह ही एक गांव है सिद्धपुरा। इस गांव के 11 विकलांगों और बृद्धों को संगठन की ओर से 10 किलो आटा और 2 किलो दाल दिया गया। उसी प्रकार से सेमरी गांव के 42 परिवार, ढकरौरा के 10 परिवार, मुडरी के 19 परिवार और बरवाया गांव के 7 दिव्यांगों को 5–5 किलो आटा और 1–1 किलो दाल वितरित किया गया।

जिला–अशोकनगर, बलबंत सिंह। मुंगावली तहसील के 18 गांवों में 185 परिवारों को राशन वितरित किया गया। इन सभी गांवों में एकता परिषद के माध्यम से पिछले एक दशक से काम किया जा रहा है। इन गांवों में 185 लोगों को राशन वितरित किया गया। इन परिवारों के चयन में यह ध्यान रखा गया था कि या तो इन परिवारों के पास गरीबी रेखा का कार्ड नहीं है, या तो वे दिव्यांग हैं, या तो बृद्ध हैं अथवा एकल महिला हैं। इसके अलावा उन

18 गांव के 185 परिवारों को बांटी राहत सामग्री

निज संवाददाता–

पिपरई। मुंगावली ब्लाक अंतर्गत 18 गांव के 185 परिवारों को एकता परिषद द्वारा राहत सामग्री बांटी गई। वितरण के लिए ऐसे परिवार चुने गए थे, जिनके पास या तो दिखा तो इन्होंने अपनी समस्या एकता परिषद के सदस्यों को बताई। परिषद ने संगठन स्तर पर समस्या को रखा तो इन परिवारों को आटा, दाल, तेल, नमक उपलब्ध करवाया गया। इसके बाद गांव-

परिवारों को भी प्राथमिकता से चयन किया था जो या तो स्वयं काम की तलाश में पलायन किये थे या पलायन से लौट कर नहीं आये लोगों के परिवारजन हों। ऐसे समस्त परिवारों को प्राथमिकता के तौर पर राषन का वितरण किया गया है। ऐसे कई परिवारध्सदस्य तो स्वयं एकता परिषद के स्थानीय कार्यकर्ताओं से सम्पर्क किया। संगठन के स्थानीय कार्यकर्ता साथी वरिष्टजनों और संगठन के अध्यक्ष से सम्पर्क करके इन सभी परिवारों के लिये राषन की मांग की। इस प्रकार की परिस्थिति से निपटने के लिये संगठन की ओर से तत्काल राहत सामग्री के रुप में आटा, दाल, तेल और नमक उपलब्ध कराया गया।

जिला–गुना, सूरज आदिवासी।

गुना जिले में देश के कई हिस्सों से प्रवासी मजदुर वापस लौटे जिनके पास खाने के लिये भी कुछ नहीं रहा। वे सभी प्रवासी मजदूर अपने–अपने घरों से लगभग 2–3 महिने पहले इस आशा से बाहर मजदूरी करने गये थे कि लौट कर कम से कम 4–5 महिने के लिये अपने परिवार के भरण–पोषण की व्यवस्था कर पायेंगे परन्तु कोरोना महामारी ने उनकी इस उम्मीद पर पानी फेर दिया। जिले के बामोरी ब्लॉक में कार्यरत एकता परिषद जनसंगठन के साथियों ने इन मजदूरों को मदद करने के लिये लगातार अपना प्रयास जारी रखे। इसी क्रम में बामोरी ब्लॉक के कुशेपुरा, शिकारी के टपरा, मगरोड़ा,

बमोरी क्षेत्र के गांवों में जाकर अब तक 600 परिवारों को पहुंचाई खाद्य सामग्री

पत्रिका न्यूज नेटवर्क

गुना. एकता परिषद जन संगठन द्वारा लगातार बमोरी तहसील के ग्रामों में जरूरतमंदों तक खाद्य सामग्री वितरित की गई। जो लोग पलायन से अपने घर लौटे हैं और जिनके पास खाने तीन का कोई इंतजाम नहीं है एवं विधवा महिला विकलांग आदि को सामग्री वितरित की जा रही है।

एकता परिषद जिला समन्वयक सूरज सहरिया ने बताया कि अभी तक 600 परिवार 15 एवं 40 ग्रामों में खाद्य सामग्री वितरण की गई है। एकता परिषद के राजाराम, भारत सिंह, कमल सिंह लगातार खाद्य सामग्री वितरित कर रहे हैं और साथ में जो लोग बेरोजगार हैं, जिनके पास कोई रोजगार नहीं है। ऐसे लोगों की भी सूची तैयार की जा रही है। जिनको रोजगार गारंटी योजना के तहत ग्राम पंचायतों के सचिवों को सौंपी जाएगी। इससे कि बेरोजगार लोगों को ग्राम पंचायतों के गांवों में रोजगार मिल सके। साथ में सभी लोगों को कोरोना महामारी के बारे में भी समझाया जा रहा है।

उमर्दा, छतरपुर, धनोरिया, सिलावटी, काबर बामोरी, पाटन, बांसखेड़ा, बरोदिया कलां, मुरादपुरा, गणेषपुरा, डिमरपुरा, जौहरी, जैतपुरा और सुडषेरा जैसे लगभग 40 गांवों में राहत सामग्री के वितरित किये गये। संगठन के सीमित संसाधनों के बीच यह प्रयास निरन्तर जारी रखा गया कि जहां तक संभव हो वंचित वर्ग के लोगों को खाने की व्यवस्था की जा सके।

जिला – ग्वालियर, रुकमणि देवांगन। घाटीगांव के बरई ब्लॉक के बाजना गांव में पलायन से लौटे 41 मजदूरों को रोजगार गारंटी के तहत 15 दिवस का काम ग्राम पंचायत के द्वारा उपलब्ध कराया गया। इनका आवेदन एकता परिषद के साथियों द्वारा 2 मई 2020 को पंचायत सचिव और सरपंच को दिया गया था। संगठन से जुड़े कार्यकर्ता साथियों के द्वारा निरन्तर प्रवासी मजदूरों की घर वापसी और फिर उन्हें अपने ही प्रदेष ६ जिले में काम दिलवाने के लिये अपना प्रयास जारी रखा गया था। ऐसे प्रयास की सफलता कई लोगों को उनका अधिकार दिलाने में मददगार होता है।

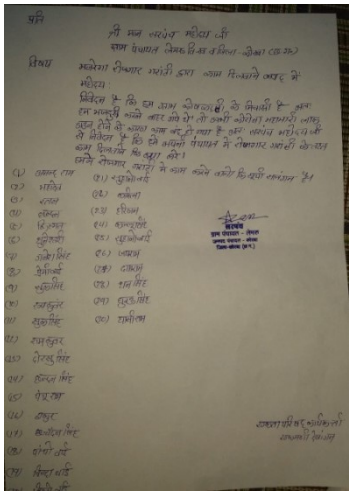

उत्तर प्रदेश

जिला–ललितपुर, सियाराम अदिवासी। उत्तरप्रदेश में संगठन के द्वारा ललितपुर और झांसी जिले में सघन रुप से काम किया जा रहा है। इन दो जिलों में प्रवासी मजदूरों को घर वापस लाने से लेकर उन्हें मनरेगा के तहत काम दिलवाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके अलावा जिनके पास खाने के लिये बिल्कुल ही अनाज नहीं है यानि सरकार की ओर से अभी तक मदद नहीं मिला है उनके बीच सीमित संसाधनो के बीच राषन का वितरण करने का प्रयास किया गया है। इसी क्रम में 24 और 25 मई 2020 को ललितपुर जिले के जाखौरा ब्लॉक के रानीपुरा, 9 नम्बर, मेलार, भरतपुर और करमोहरा गांव के 140 परिवारों के बीच 14 क्विंटल आटा, 140 किलो तुअर दाल एवं मास्क का निःशुल्क वितरण किया गया। संगठन के स्थानीय कार्यकर्ता लगातार गांव के लोगों से सम्पर्क में हैं और उन्हें हर संभव मदद करने का प्रयास कर रहे हैं।

बिहार

जिला – पटना, कोरोना समूह। एकता परिषद बिहार द्वारा लगभग 80 जरूरतमंद परिवारों के बीच राहत सामग्री वितरित किया गया। कोथमा गांव के कुछ लोग जो कि मुसर समुदाय से हैं कूड़े के ढेर में अपनी आजीविका तलाश रहे हैं, परिवार के कमाऊ व्यक्ति दूसरे जगह में फंसे हुए हैं। कुछ बुर्जुग, लाचार आर असहाय लोग हैं इनको प्रत्येक परिवार के हिसाब से खाद सामग्री, दाल, चावल, आटा, नमक, साबुन की टिकिया दिया गया है। यह लोग राशन कार्ड विहीन परिवार भी हैं इस कार्य में एकता परिषद के उपाध्यक्ष श्री प्रदीप प्रियदर्शी स्टेट टीम के सदस्य श्रीमति मंजू डुंगडुंग, नरेश मांझी, प्रद्युमन सिंह प्रखंड समन्वयक दानापुर राजकुमार प्रखंड समन्वयक जिला पटना इत्यादि कार्यकर्ता मौजूद थे।

पलायन से लौटे श्रमिको के लिये एकता परिषद छत्तीसगढ़ चला रही कई प्रकार के काम .....

स्त्रोत–निशाद भाई एवं रघुवीर दास, छत्तीसगढ़

पलायन से लौटे मजदूरों को राशन वितरण

एकता परिषद छत्तीसगढ़ और प्रयोग समाज सेवी संस्थ द्वारा पहले चरण में छत्तीसगढ़ के 6 जिलों के पलायन परिवार के आश्रितों को 67 पैकेट सूखा राशन का वितरण किया गया, जिसमें राजनांदगांव जिले में 11 परिवार, गरियाबंद जिले में 4 परिवार, रायपुर जिले में 10 परिवार, कोरिया में 10 परिवार, सूरजपुर में 10 परिवार, सरगुजा में 10 परिवार तथा जशपुर में 12 परिवार शामिल है । दूसरे चरण में प्रयोग समाज सेवी संस्था द्वारा 5 जिलों के पलायन परिवार के आश्रितों को 122 पैकेट सूखा राशन वितरण किया गया, जिसमें कोरबा जिले के 33 परिवार, कोरिया जिले के 30 परिवार, सूरजपुर जिले के 20 परिवार, सरगुजा जिले के 14 परिवार तथा राजनांदगांव जिले के 25 परिवार शामिल है । बिलाड़ी, जिला रायपुर में महिला मण्डल द्वारा 20 गरीब परिवारों को चावल तथा सोयाबीन बड़ी का वितरण किया गया ।

पलायन से लौटे मजदूरों को मनरेगा के तहत् काम

छत्तीसगढ़ के कार्यक्षेत्र के जिले – राजनांदगांव, कोण्डागांव, नारायणपुर, कांकेर, धमतरी, गरियाबंद, महासमुन्द, रायपुर, बलौदाबाजार, बिलासपुर, कोरबा, कोरिया, सरगुजा, सूरजपुर, बलरामपुर, जशपुर तथा रायगढ़ जिलों में मनरेगा का कार्य चल रहा है, जिसमें 90 पलायन परिवार तथा आश्रित परिवारों को काम दिया जा रहा है । इसी प्रकार पौड़ी उपरोड़ा ब्लॉक में एक गांव है – कुम्हारी दर्री। इस गांव के वंचित वर्ग के परिवारों को काम दिलाने के लिये एकता परिषद के स्थानीय कार्यकर्ताओं के सहयोग से एक आवेदन फरवरी 2020 में संबंधित पंचायत के सरपंच को दिया गया था। कोरोना महामारी के कारण लॉकडाउन होने पर इस आवेदन पर कोई कार्यवाही नहीं की गई। अब जब पूरे देश में प्रवासी मजदूरों की घर वापसी हो रही है तब कुम्हारी दर्री के लोगों द्वारा स्थनीय प्रशासन पर कुम्हारी दर्री के आवेदन पर भी कार्यवाही करने के लिये दबाव बनाया गया और अन्ततः गांव में मनरेगा के तहत तालाब निर्माण का काम शुरु किया गया। इस काम के लिये 12 लाख रुपये को मंजुरी दी गई। 24 मई 2020 को इस तालाब निर्माण के प्रारंभ में पूजन किया गया। संगठन के कई लोगों को इसमें मजदूरी मिली हैं। एकता परिषद के युवा साथी, मुखिया साथी तथा कार्यकर्ता साथियों द्वारा अधिकतम परिवारों को रोजगार दिलाने के लिए प्रयास किया जा रहा है । संगठन के कार्यकर्ता गांव वालों के साथ मिल कर आवेदन लगा रहे हैं ताकि मनरेगा के तहत जरुरतमंद परिवारों को काम मिले जिससे उनका जीविकोर्पाजन हो सके। इसी तारतम्य में सरगुजा जिले के उदयपुर ब्लॉक के पंडरीडांड नामक गांव के 13 परिवारों के लिये आवेदन दर्ज किया गया है।

पलायन से लौटे मजदूर जुटे आजीविका जुटाने में,कोरोना संक्रमण से बचाव के लिये किया जा रहा दीवार लेखन

कार्यक्षेत्र में देश के विभिन्न भागों से लौटकर आये हुये आदिवासी परिवार जंगल से तेंदुपत्ता संग्रहण कर अपनी आजीविका जुटाने में सक्रिय हो गये हैं। कोरबा ब्लॉक में कार्यरत् संगठन की महिला कार्यकर्ता श्रीमती रुकमणी देवांगन के द्वारा देवपहरी गांव के तेंन्दुपत्ता फड़ में जाकर काम कर रहे मजदूरों को कोरोना महामारी से बचने के विभिन्न उपायों की जानकारी दिया गया

जंगल से संग्रहित तेंदूपत्ता,फड़ पर जमा कराते आदिवासी

और लोगों को एक-एक मास्क देकर मास्क पहनने के महत्व को समझाया गया। युवक-युवती द्वारा सभी गांवों में दीवाल लेखन का कार्य किया जा रहा है । क्यों कि बचाव हेतु व्यापक जागरूकता अत्यन्त आवश्यक है ।

इसी प्रकार कार्यकर्ता उद्देश्वर नायक के द्वारा जिल्दाबसाहट, सोनारी, जामभाठा, हर्दीमहुआ, कदमझारिया आदि में मनरेगा के तहत काम कर रहे मजदूरों के बीच जाकर हाथ धोने, सामाजिक दूरी बनाये रखने और मास्क पहनने के महत्व को समझाया गया।

संस्था के सभी कार्यकर्ता, युवा साथी तथा मुखियाओं द्वारा कोरोना महामारी से बचाव हेतु

घर से बाहर जाने पर मास्क का अनिवार्य उपयोग, बाहर से घर आने पर तुरन्त साबुन से 20 सेकण्ड हाथ धोना, परिवार को सभी को हर घण्टे में साबुन से हाथ धोने, घर तथा मोहल्ले में साफ-सफाई रखने तथा शारीरिक व सामाजिक दूरी बनाकर रखने के लिए व्यापक तौर पर जागरूकता कार्यक्रम चलाया जा रहा है। जनधन खाते में सरकार द्वारा प्राप्त सहयोग राशि को निकालने में भी संगठन के कार्यकर्ता लगातार मदद कर रहे हैं। इसी क्रम में पंडरीपानी गांव के

ऐसे लोगों की सूची बनाई गई जिनके पास राशन कार्ड नहीं है। इस सूची को एक आवेदन के साथ संलग्न करके स्थानीय विधायक को दिया गया है ताकि जिनके पास राशनकार्ड नहीं है उन्हें भी राशन दिलाया जा सके।

श्रमदान शिविर का आयोजन

कोरिया जिले के 2 गांव तरतोरा तथा जोलगी गांव में श्रमदान शिविर के माध्यम से तालाब गहरीकरण कार्य के लिए पंचायत के साथ चर्चा किया गया है, जिसमें लगभग 60 गरीब परिवारों को 5 दिन का रोजगार, जशपुर जिले के डारीबिगा तथा सोनपहरी गांव में श्रमदान शिविर कर तालाब गहरीकरण कार्य, 60 गरीब परिवारों के साथ काम तथा सूरजपुर जिले के चारपारा गांव में 30 गरीब परिवारों के साथ 5 दिन का श्रमदान शिविर कर तालाब गहरीकरण कार्य किया जायेगा । इस काम के बदले परिवारों को काम के बदले सूखा राशन पैकेट दिया जायेगा । जिसकी पूरी रूप-रेखा तैयार कर लिया गया है जो जल्द ही प्रारंभ होगा । इस श्रमदान शिविर में कोरोना वायरस के बचाव के तरीकों पर जागरूक किया जायेगा तथा सभी परिवारों को मास्क का वितरण किया जायेगा ।

ओड़िसा

केस स्टडी

आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम.....

ओड़िसा के कालाहांडी जिले में एक गांव है नागझारी। इस गांव में एकता परिषद जनसंगठन की महिला कार्यकर्ता श्रीमती शारदा पिछले 3 सालों से काम कर रही हैं। शारदा स्वयं एकल महिला होते हुये भी साहसी हैं और संस्था संगठन की मदद से अपने अन्दर नेतृत्व क्षमता का विकास करने में सफल हुई है। शारदा के अन्दर महिलाओं को उनका संवैधानिक अधिकार दिलवाने का जुनुन है और अपने हर छोटे–बड़े काम में वे इस बात का ध्यान रखती हैं कि जहां तक संभव है उनके काम से सबसे पहला लाभ महिलाओं को हो। अपनी इसी सोच के कारण उन्होने नागझारी गांव की दैनिक मजदूरी करने वाली ममता पात्रा को अधिकार दिलाने के लिये सदैव प्रयत्न करती रहती थीं। वन अधिकार अधिनियम आने के बाद शारदा ने व्यक्तिगत दावे लगाने के क्रम में ममता पात्रा का दावा भी दर्ज कीं और सारी प्रक्रियाओं के बाद ममता पात्रा को उनकी भूमि का अधिकार–पत्र मिला। इस छोटी सी जमीन पर गाय के लिये सेड बनाने के लिये आवेदन दर्ज किये गये और इसी वर्ष (2020 में)

मनरेगा के तहत ममता पात्रा को 1 लाख 30 हजार रुपये दिये गये। आज ममता बहुत खुश हैं और पूरे लगन से गाय के लिये सेड तैयार करने में लगी हैं। इन छोटे–छोटे प्रयास और सहयोग से एक महिला का जीवन आत्मनिर्भर हुआ है।

असम

एकता परिषद, असम के द्वारा प्रवासी मजदूरों को मदद...

नयनतारा जी, असम

देश के प्रत्येक क्षेत्र से गरीब और वंचित लोग काम की तालाश में पलायन करते हैं परन्तु इस कोरोना वायरस ने इन प्रवासी मजदूरों की समस्याओं से आम जनता को रु ब रु कराया है। देष के उत्तर– पूर्वी राज्यों से लोग बिल्कुल दक्षिण में स्थित केरल और तमिलनाडू जैसे राज्यों में काम की तालाष में आते हैं। ऐसा ही एक समूह लॉकडाउन के कारण चेन्नै में फंसा था। असम मूल के ये मजदूर अपना समय डा. अम्बेडकर लॉ युनिवर्सिटी और असम भवन में व्यतीत कर रहे थे और लगातार एकता परिषद के असम टीम से सम्पर्क में थे। 19 मई 2020 को लगभग 2000 मजदूर चेन्नै स्टेशन पर इकट्ठे हो गये, वापस घर लौटने के

लिये और 22 मई को सकुशल अपने राज्य में पहुॅच गये। अपर असम के श्रमिक डिब्रुगढ़ और लोवर असम के श्रमिक गुवाहाटी स्टेशन पर उतर कर कोरनटाईन सेन्टर पर गये। इस प्रकार से लॉक डाउन के पूरे 60 दिनों के बाद भी अनेक समस्याओं को सहते हुये प्रवासी मजदूर घर आने के लिये लाईन में खड़े हैं।

चंडीगढ़ मे असम के 4 विद्यार्थियों को श्री संजय राय,(NYP] दिल्ली) द्वारा असम टीम के अनुरोध पर तुरंत 1100 रुपये पेय कर सहयोग किया और चंडीगढ़ के एक सोशल वर्कर श्रीमती अस्तिन्दर कौर से एक महीने के लिए खाद्यान्न और रुम का किराया दिलवाने के लिए प्रेरित किया। इस कार्य के लिए हम संजय भाई को असम एकता परिषद की ओर से हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

कोरान संकट की विपरीत परिस्थितियों के बीच से निकली, बैबसी, मजबूरी, लाचारी और ऑखों को नम करने वाली दुख भरी कुछ कहानियॉ, उन्ही की जुबानी.....

लॉकडाउन खत्म होने के इन्तजार में ..... सात बच्चों के पेट की आग बुझाती एक महिला की आवाज

स्त्रोत–श्री प्रसन्ना बरीक, धार

जिला धार – मध्यप्रदेश के खंडवा जिले के खंडवा गाँव की ही प्रवासी मजदूर उम 40 वर्ष छाया प्रत्नि विशन जो कि विधवा है अपने घर लौटने के लिए बेसब्री से इंतजार कर रही है। वह अपने सात बच्चों के साथ मध्य प्रदेश में धार जिले के लंगसेरी में गेहूं काटने के लिये आई थी, जिससे उन्हे श्रम के बदले कुछ पैसे और अनाज मिल जाये और वह अपने बच्चों का पेट कुछ महीने तक भर सके। छाया कहती है कि "हम केवल अपने घर जाने और अपने परिवार के साथ रहने का इंतजार कर रहे हैं। अब हमें काम में कोई दिलचस्पी नहीं है। खेतों के मालिक ने देहरी और कुक्षी में कोविद –19 मामलों की बढ़ती संख्या देख कर कृषि कार्य को रोक दिया है, जो खेत मालिक से मिला खर्च हो गया है। हमारे भीतर चिंता और भय पैदा होता है कि अगर कुछ भी होता है और मैं और मेरे सात बच्चे भूख से मर जाते हैं तो हमारे शरीरों का भी किसी को ध्यान नहीं रहेगा"। भरी हुई आंखो और क्रोध से उसने कहा।

छाया धार के लैंग्सेरी में फरवरी के महीने में ही आई थी उसने एक महीने काम किया जब लॉक डाउन की घोषणा हुई। उस दिन देर शाम को उसके पास पैसे नहीं थे फिर भी उसे काम का इंतजार करती रही। लेकिन 14 कोरोना पॉजिटिव

मामलों की पहचान देहरी के पास लांसेरी में हुई। इसलिए कृषि मालिक ने काम बंद कर दिया है। छाया के सात बच्चे हैं वे भूख से जूझ रहे हैं। ग्राम पंचायत और अन्य व्यक्तियों ने राशन प्रदान किया था लेकिन वह पर्याप्त नहीं था। फिर उसने लैंगसेरी में घार घर जाकर अनाज इकट्ठा करना शुरू किया और इंतजार किया कि कब लॉक डाउन समाप्त होगा और वह अपने घर जाएगी।

सामाजिक कार्यकर्ता रंजना चौहान और लैगसेरी स्कूल के अध्यपक श्रीप्रतापसिंह मांडलियू ने छाया को समझाते हुये कहा कि अब कोरोना पॉजिटिव कि संख्या खंडवा मे बड़ती जारही है ओर वह रेड जोन है। रेड जोन के तहत यदि आप वहां जाएंगे तो आप वहां सुरक्षित नहीं होंगे। आपको यहां सामान्य अवधि तक इंतजार करना चाहिए। उन्होने एकता परिषद के सदस्य श्री प्रसन्ना जी से मोबाइल पर चर्चा की। एकता परिषद धार टीम उसी दिन तुरंत लैगसेरी पहुॅची और परिवार से सम्पर्क कर सारी स्थिति को समझा है और तुरंत राहत के तौर पर 1 माह के लिये राशन और हाइजीन किट प्रदान की गई है। लैगसेरी के सरपंच और सचिव की उपस्थिति में (15 किग्रा गेहूं का आटा, तुअर दाल - 3 किग्रा, चीनी - 3 किग्रा, चावल - 5 किग्रा, कुकिंग ऑयल - 2 लीटर, नमक - 2 किग्रा, हल्दी पाउडर - 200 ग्राम, धनिया पाउडर - 200 ग्राम, मिर्च पाउडर - 200 ग्राम, बाथ शॉप - 4 पीस, डिटर्जेंट शॉप - 4 पीस, सैनिटरी नैपकिन - 1 पैकेट, मास्क - 10 पीस, चायपत्ती - 50 ग्राम) एक महीने के लिए दिया गया है। अब छाया भूख की चिन्ता छोड़कर मजदूरी का इंतजार कर रही है।

गाँव में मजदूरी नही थी, खाने के पड़े लाले तो किया जयपुर की और रुख........ दयाराम आदिवासी की कहानी उसी की जुबानी

स्त्रोत-श्री हरिमोहन बैरवा, श्योपुर

मैं दयाराम जिला श्योपुर के महु गॉव से सहरिया समुदाय से हूॅ, घर का मुखिया होने के कारण परिवार की सारी जिम्मेदारी है। घर में 7 सदस्य हैं जिसमें मेरी पत्नी धन्नो,बड़ी लड़की मौसमी, उससे छोटा लड़का राहुल , उससे छोटा मनीष , उससे छोटी लड़की प्रिया , एवं माता कम्मो बाई हैं । हम दोनो पति पत्नी गाँव और आसपास के गाँव में मजदूरी कर अपनी आजीविका चला लेते हैं। लेकिन इस वर्ष गांव या आस पास किसी भी प्रकार की मजदूरी नहीं मिली, रोजगार गांरटी के काम के पिये भी पंचायत में चक्कर लगाये फिर भी काम नही मिला और गांव में खाने के लाले पड़ने लगे। इन्ही परिस्थितियों में गाँव में मजदूरी न मिलने के कारण मैं अपनी पत्नी धन्नो और बड़ी लड़की मौसमी को लेकर 2 महीने पहले मेहड़ता सिटी, जिला नागौर राजस्थान में मजदूरी के लिए चला गया । वहां काम की तलाश की तो 4 से 6 दिन तो काम ही नहीं मिला फिर श्योपुर के जुलानियापूरा गाँव के बनवारी आदिवासी से बात हुई तो उसने मुश्किल से टिंकू शर्मा ठेकेदार से कहकर काम दिलवाया फिर उन्ही के पास रोड पर गिट्टी और बजरी डालने का काम करने लगे । विहाँ पर भी ठीक से काम नहीं मिला। वहाँ कभी रोड पर बजरी खत्म हो जाती तो कभी गिट्टी खत्म हो जाती जिससे कभी पूरा दिन काम हो जाता तो कभी आधा दिन ही काम हो पाता तो कभी बैठे ही रहना पड़ता । रोड पर कुल 11 दिन काम मिला था। जैसे तैसे काम चल रहा था कि कोरोना बीमारी के बारे में लोगों से सुना और दूसरे ही दिन 22 मार्च से ही ठेकेदार के द्वारा काम बंद होने के बारे में बताया तो चहरे पर मायूसी सी छा गयी । क्योकि अब की बार काम तो वैसे ही ठीक से नही मिला था। वहीं से जो कमा रहे थे वह साथ के साथ पैसे खर्च भी हो रहे थे । लोकडाउन में कहीं जा भी नही पा रहे थे। 8 से 10 दिन वहाँ रोड पर ही पड़े रहे । किसी को कही आने जाने भी नहीं देते थे रोज झोपड़ियो के पास कभी पुलिस वाले तो कभी प्रशासन के लोग आकर डरा कर चले जाते थे । इसी बीच वहाँ पर आस पास के लोगों से सुना कि पास के गाँव में फसल कटाई का काम चल रहा है और उनको मजदूरों की जरूरत है तो वहाँ पर चौरी छिपे गेंहु और चने की फसल काटी । हम तीन लोगो ने 14 दिन यहा पर मजदूरी की । वहां भी एक दिन पुलिस आ गई और वह भी बंद करवा दिया । इस प्रकार 2 महीने में तीनो लोगो ने केवल 25 दिन ही काम किया जिसमें

तीनो लोगो ने 6700 रुपये कमाए जिसमें से 5700 खर्च हो गये और 1000 हजार रुपये घर लेकर आये, और काम बंद होने से फिर हम फिर रोड पर ही पड़े रहे ।

2 – 3 दिन बाद नागौर जिले के कलेक्टर और SDM साहब हम लोगों के पास आये, क्योकि हम लोग रोड पर ही रह रहे थे, इसी को देखते हुए SDM साहब ने हम लोगों को बोला कि तुम लोग रोड पर ही रह रहे हो कोई अनहोनी न हो जाये कोई टक्कर वक्कर न मारकर चला जाये । कोई नुकसान भी पहुँचा सकता हैं । इसलिए तुम लोग यही के पास के डांगावास में सरकारी स्कूल हैं उसमें रहो फिर हम लोग सभी उस स्कूल में चले गये । एक दिन हमारे पास वहाँ के तहसीलदार साहब आये और उन्होंने हमारी जानकारी ली और हमारे लिए खाना भी मंगवाया और हमारी सारी व्यवस्थाएं करवाई ।

इसी बीच एक दिन जुलानीयापुरा के बनवारी के एकता परिषद कार्यकर्ता हरिमोहन का फोन आया कि श्योपुर जिले के कितने गाँव के लोग वहां पर आप लोगों के साथ स्कूल में कॉरेनटाईन हैं। उन्हे बताया कि यहाँ पर जुलानीयापुरा ,महु, बर्धा बुजुर्ग, सिलपुरी, तिल्लीडेरा,और गुना जिले के लगभग 200 लोग हमारे साथ में ही हैं । उन्होंने कहा कि चिंता मत करो सब ठीक हो जाएगा हम लोग श्योपुर के प्रशासन से बात करेंगे कुछ न कुछ तो इंतजाम करवाएंगे । जिससे हम लोगों को थोड़ी राहत मिली कि किसी ने भी हमारी सुध नही ली लेकिन एकता परिषद वालो ने आज हमारी सुनी तो सही, जिससे हमारी घर वापसी की भी आस जगी और हरिमोहन जी द्वारा हमारे बारे में श्योपुर के अखबारो में भी खबर निकलवाई और जयसिंह भाई साहब द्वारा श्योपुर कलेक्टर को भी हमारी जानकारी (सूची) दी ।

एक दिन मेहड़ता के तहसीलदार साहब और डाक्टर ,नर्स हमारे पास आये जिन्होंने हमारी जाँच आदि करवाई और कहा कि आज शाम तक तुम्हारी घर जाने की व्यवस्था हो जाएगी इतना सुनते ही सभी के चहरे पर चमक आ गई । और श्योपुर के लोगों के लिए अलग से तीन बसों की व्यवस्था कर हम लोगों को श्योपुर भिजवाया । जिसमें पहले हमें दांतरदा के स्कूल में रोककर हमारी जांच करवाई गयी । और वहाँ पर हमसे मिलने गाँधी आश्रम के जयसिंह भाई साहब भी आये और हम लोगों को खाना खिलवाया जिन्हें देखकर लगा कि अगर एकता परिषद नहीं होता तो हमारा क्या होता।

दयाराम के परिवार की अभी वर्तमान स्थिति भी ठीक नहीं है जिस दिन से आये हैं उस दिन से बैठे हैं यहाँ पर भी कोई काम नही है यहाँ पर उसकी माँ और छोटे बच्चों ने कुछ अनाज बीनकर रखा था उससे काम चला फिर 20 दिन पहले ही PDS की दुकान से हर सदस्यों के 10 – 10 किलो गेहू, 70 किलो चावल मिले हैं जिनको बच्चों को खिला रहे हैं। अभी वह भी खत्म होने के बाद फिर भूखा मरने की नोबत आने वाली है। अभी सरकार और एकता परिषद से यही विनती हैं कि गाँव में ही कुछ रोजगार मिल जाये तो हमारा गुजारा हो सकें ।

खेत मालिक ने नहीं दी पूरी मजदूरी.....
4 बच्चों के साथ 3 दिन पैदल चलकर पहुँचे कलारना गांव।

स्त्रोत–राधावल्लभ जांगिड़,श्योपुर

जिला – श्योपुर। रामकेश आदिवासी कराहल विकास खडं के कलारना गांव का रहने वाला है इसके परिवार में इनकी पत्नी अमलेशी बाई सहित 7 लोगो का परिवार है। परिवार के पास जमीन नहीं है इसलिए ये मजदूरी करके अपने घर का पालन पोशण करता है। रामकेश का कहना है कि हमारे तरफ नियमित मजदूरी नही मिलती है। महीने में 10 दिन काम ही मिल पाता है। आर्थिक बदहाली में दो वक्त का भोजन मिलना दूभर है। गांव के ही कमलेश गुर्जर से पता चला कि राजस्थान के आकोदिया गांव में उसके यहां अभी चने की कटाई होनी है और उसका फोन भी आया था की उनको मजदूरों की जरूरत है, रामकेश ने सोचा कि यहां तो मजदूरी है नहीं है और फिर बेठे रहने से घर का खर्चा चलने वाला तो है नहीं इसलिए उसने थोड़ी देर के लिए सोचा और अपना मन बनाया और जाने के लिए तैयार हो गया । 9 मार्च को ऑटो के माध्यम से आकोदरी गांव पहुँच गये और 10 मार्च को इन्होंने अकोदिया गांव में चने की कटाई की मजदूरी शुरू कर दी 14 दिन लगातार इन्होंने वहां पर 250 रूपये एक दिन के हिसाब से मजदूरी करना तय किया गया। हमको काम करते हुए 14 दिन ही हुए थे लॉक डाउन कर दिया गया। हमको घर जाने की चिंता सताने लगी और उधर चने की कटाई भी समाप्त होने वाली थी। हमने सेठ श्यामसुंदर गुर्जर से कहा कि हम लोग अपने घर वापस जाना चाहते हैं हमारे जितने दिन की मजदूरी बनी है आप हमारा हिसाब कर दीजिए और हमें घर छोड़ने की व्यवस्था भी आपको ही करनी है। तो तभी

श्यामसुंदर गुर्जर ने कहा के अभी तो राजस्थान और मध्य प्रदेश की सीमाएं सील कर गी गई है आने जाने के सभी साधन बंद है। इसलिए मैं आप लोगों को छोड़ने में असमर्थ हूं। तो रामकेश द्वारा कहा कि आप हमारे हिसाब कर दीजिए हम अपने तरीके से चले जाएंगे। सेठ श्याम सुंदर द्वारा उनका 14 दिन का हिसाब किया गया जिसमे उन दोनों की मजदूरी 7000 रूपये बनी लेकिन सेठ द्वरा बोला गया कि अभी तो मेरे पास भी पैसे नहीं है क्यों कि बेंक जाना हुआ नही हे अभी मेरे पास 2000 रूपये हैं आप अभी यह ले जाइए बाकी के 5000 रूपये मैं किसी से भी भिजवा दूंगा तो मेरे दौरा कहा गया कि भाईसाब इतने से पैसे से क्या होगा मेरे साथ छोटे छोटे बच्चे है और मुझे पैदल चलकर बहुत दूर जाना है तभी श्यामसुंदर जी ने कहा कि कुछ भी हो मेरे पास पैसे नहीं है तुमको जैसा अच्छा लगे वो करो तो में उसी समय वह 2000 लेकर वहां से आने की तैयारी शुरू कर दी। अपने सामान की पोटली बांधकर सिर पर रखकर चल दिए लेकिन हमारे सामने समस्या थी कि हम सामान को उठाएं या बच्चों को क्योंकि मेरे साथ मेरे 3 लड़कियां थी और एक लड़का था 4 वर्ष की पूनम और 5 वर्ष की नैना। दोनों बच्चियां धीरे धीरे पैदल चलने लगी। पैरों में चप्पल नहीं थी नंगे पैर चल रही थी कुछ दूर चली पैरों में छाले हो गए कांटे लग गए और रोने लगी और बोली पापा नहीं चला जाता हमे गोदी में लेलो तो यह बात सुनकर मेरी आंखे नम हो गई सोचा ये भगवान कैसे कैसे दिन दिखा रहा है।

तो हमें थोड़ी देर के लिए ऐसा लगा कि अब हम क्या करें क्योंकि घर पहुँचना हमारी मजबूरी थी क्योंकि 14 दिन काम करने के बाद भी हमें पूरी मजदूरी नहीं मिली। खाने के लिए एक वक्त का आटा रखा हुआ था जिससे एक टाइम का गुजारा हो गया था सुबह उठकर हम चलना शुरू किया और चंबल नदी के किनारे आ गए नाव की तलाश की ताकि हम नाव के माध्यम से नदी पार कर सके लेकिन सभी नाव प्रशासन द्वारा अपने जप्त में कर ली गई थी फिर और समस्या हमारे सामने आने लगी कि

अब हम कैसे पार करेंगे। फिर धीरे धीरे चलना शुरू किया नदी के किनारे किनारे चलते गए और धर्मपुरी गांव आते-आते बुरी तरह से थक गए थे तो हम वहां रुक गए । धर्मपुरी सरपंच को पता चला कि कुछ बाहर के मजदूर हमारे गांव में आए हुए हैं तो सरपंच हमारे पास आए और उन्होंने हम से धर्मपुरी में ही रात रुकने का बोला था कि आप यहां रोकिए मैं आपके लिए आटे की व्यवस्था करता हूं तो हम धर्मपुरी में ही रुक गए सरपंच द्वारा हमें आटा दिया गया और सब्जी के लिए कद्दू दिया गया जिससे हमारा रात का गुजारा हो गया था सुबह उठते ही सरपंच ने कहा अगर आप आज रुक सकते हो तो रुक जाइए मेरे खेत में गेहूं खड़े हैं उसको काट दीजिए मैं आपको जो मजदूरी बनेगी और वह मजदूरी दूंगा तो हमने एक दिन उनके गेहूं काटे तो हमें 500 रूपये की मजदूरी प्राप्त हुई उसके बाद फिर हमने दूसरे दिन धर्मपुरी से चलना शुरू कर दिया चंबल के किनारे किनारे चलते गए जब हम हताश हो गए थे कि अब हमें नदी पार करनी ही पड़ेगी तो हमने सामान की पोटली और बच्चों को कंधे पर बैठाकर नदी को पार किया ,पार करने के बाद हम केतोदा गांव में आ गए और चलते रहे शाम हो गई और चलते-चलते पार्वती नदी को पार कर के बामन खेड़ी गांव में पहुंच गए वहां पर हमने भूखे प्यासे रात गुजारी क्योंकि हमारे पास खाने को कुछ नहीं बचा था वह रात हमारे लिए सबसे कठिन रात थी क्योंकि हमें हमारा अफसोस नहीं था कि हम भूखे हैं लेकिन जब मेरे छोटे-छोटे बच्चे रो रहे थे तब मुझे बहुत अफसोस हो रहा था कि जिंदगी में पहली बार मेरे बच्चे भूखे सो रहे हैं , जैसे तैसे रात निकालकर हम सूरज की पहली किरणों के साथ चलना शुरू किया और चलते-चलते सोंठवा गांव में पहुंच गए वहां पहुंचकर हमने कलारणा सरपंच, रामविलासी आदिवासी को फोन करके बताया कि हम लोग अकोदिया से चलकर सोंठवा गांव तक पहुंच गए हैं हमारी हालत बहुत गंभीर हैं हम लोग 3 दिन से पैदल चल रहे हे ओर हम भूखे हैं हमारे साथ बच्चे हैं वह भी भूखों की मारे तड़प रहे हैं और अब हम चलने में असमर्थ हैं तो हमें लाने के लिए आप कुछ व्यवस्था कीजिए तो सरपंच द्वारा हमें लेने के लिए ट्रैक्टर भेजा गया जिसमें हम लोग बैठकर हमारे घर कलारना तक पहुंचे ।

इस तरह 3 दिन पैदल चलकर अपने घर को देख कर मेरी आंखे नम हो गई की घर तो घर ही होता है परन्तु आज भी मेरे सामने समस्या कम नहीं हुई ओर दिन पे दिन बढ़ती ही जा रही है क्यों की इस कोराना महामारी के कारण मजदूरी मिल नहीं रही है और ना मेरे पास ना अनाज ना पैसा हे में उधार पैसे लेकर मेरे 4 छोटे छोटे बच्चो का पेट भर रहा हूं जो सरकार के दौरा पोषण राशि दी जा रही है वो भी नहीं मिल रही है कंट्रोल से गेहूं चावल जो भी मिलता है उसी से अपना पेट भर रहा हूं अब तो हमारी जिंदगी भगवान भरोसे है पता नहीं कब तक मजदूरी मिलेगी – रामकेश ....

छत्तीसगढ़ के रायपुर कॉरन्टीन केन्द्र से प्रवासी श्रमिक ताकेश्वर निशाद से सुश्री श्रद्धा रमानी का साक्षात्कार...

स्रोत – श्रीमति मीना वर्मा,रायपुर

33 वर्षीय ताकेश्वर निषाद जी ग्राम गुजरा ब्लॉक तिल्दा जिला रायपुर (छ.ग.) के रहने वाले है जो की अपना और अपने पुरे परिवार का पालन पोषण के लिए महाराष्ट्र के पुणे शहर में काम करने के लिए अपनी पत्नी मीना निषाद जी के साथ गए थे, जो पिछले 5 वर्षो से पुणे शहर में सिविल लाइन का काम करते आ रहे हैं, और ो भी दानो मिलकर कमा पाते हैं उसमें ही अपने पुरे परिवार की गुजर बसर करते हैं।

यह एक भूमिहीन परिवार है और इसके पीछे इनके दादी जी, बूढ़े माँ-बाप, और 3 बच्चे है जो अपने दादा-दादी जी के साथ रहते हैं जबकि ये दोनों पुणे शहर में काम करते है और इनका पूरा परिवार ये पति-पत्नी की कमाई पर ही आश्रित है। इनके पास कोई अन्य काम भी नहीं है जिससे यह अपना और अपने परिवार का गुजर बसर कर सकें इसलिए इन दोनों को पुणे में ही अपने बच्चों से दूर रह कर काम करने होता है।

कुछ ही समय पहिले ये लोग घर आये थे, अपने बच्चों और बूढ़े माँ–बाप के साथ खुशी–खुशी से रंगों का त्यौहार होली मनानें, और होली के तुरंत बाद वापिस चले गये। पर किसको पता था की इस तरह जो कुछ नये सपने सजा कर फिर से काम करने चले थे अब इस तरह उनकी जिन्दगी एक ठेहरावों पर आ जाएगी। एक नयें जोश के साथ ताकेश्वर निषाद जी और उनकी पत्नी ने पुणे में एक सप्ताह काम किया ही था, कि 22 मार्च 2020 से लॉक डाउन के चलते काम बंद हो गया और ठेकेदार ने भी कह दिया की लॉक डाउन होने के कारण काम बंद करना पड़ रहा हैं। जैसे ही सब कुछ ठीक होता है आप लोगो को फिर बुला लिया जायेगा, पर अभी अपने घर चले जाइये। ताकेश्वर जी और उनकी पत्नी ने

हार नहीं मानी और इस समय में भी दोनों पति–पत्नी ने मिलकर डेढ़ माह तक संघर्ष किया और इस संघर्ष में पहला आसरा जो 10 किलों चांवल,10 किलों आटा, और 3 किलों दाल देंकर उनकें ठेकेदार और मकान मालिक ने मदद की जिनकें घर का काम ताकेश्वर जी किया करते थें। दोनों पति–पत्नी को राहत तो मिली पर यह मदद कब तक ताकेश्वर जी को रहत देती। जब अनाज खत्म होने लगा तब ताकेश्वर जी ने अपने घर से 5000 रु मंगवाए और उन रुपयों से गुजारा किया। पर अब लॉक डाउन के चलते और इस महानगरी की मंहगाई में उन्हें अपना जीवन निर्वाह करना मुश्किल होते दिख रहा था और साथ ही साथ उनके झुगी – झोपड़ी की तरफ भी यह महामारी फैलने का डर लगाने लगा।

ताकेश्वर जी और उनकी पत्नी ने घर जाने का सोचा पर अब तो न ही उनके पास पैसे रहे और न ही पुणे से रायपुर का सफर उनके लिए आसान था, पर शायद हिम्मत कुछ बाकी थी, इसलिय वें दोनो नें बहुत प्रयास किये और कहते है कि प्रयास कभी विफल नहीं होता। तब उन्हें किसी ने बताया की महाराष्ट्र सरकार ने पुणे से रायपुर (छ.ग.) के लिए निःशुल्क दो से तीन बसें चला रहे है, तब ताकेश्वर जी का खुशी का ठिकाना न रहा वें अब अपने बच्चों के पास और बूढ़े माँ–बाप के पास जल्दी ही पहुँच जाएंगे। ताकेश्वर जी अपनी पत्नी मीना निषाद और बाकी अपने 11 साथियों के साथ, दो दिनों का बस का सफर तय कर के 8 कि. मी. दुर – 18 मई को पहुँचे और वहाँ से पैदल चलकर अपने ब्लॉक तिल्दा तक आये। जहाँ उनका जाँच तिल्दा स्वस्था केन्द्र में हुआ और गुजरा ग्राम के शासकीय स्कुल मे ही 14 दिनों के लिए क्वारंटाइन अवधी में रखा गया, जिसका आज आठवां दिन हैं। जहाँ खाने–पीने के साथ–साथ साफ–सफाई का पूरा ध्यान सरपंच द्वारा किया जा रहा है।

लेकिन १४ दिनों के बाद जब ताकेश्वर जी अपने घर जाएंगे तब का क्या ? उन्का ८ सदस्यों का परिवार जो उन पर पुरे तरह से आश्रित है वह तब अपना और अपने पुरे परिवार का पालन पोषण कैसे करेंगे जबकि उनके पास भूमि भी नहीं है, तब रोजी–रोटी कहाँ से आये यह एक बहुत बड़ा सवाल हैं। और ना ही कोई रोजगार गारन्टी का आसरा है, फिर भी एक आशा की किरण ताकेश्वर जीके आँखों में है और वह इस कोरोना महामारी के बीच भी अपने परिवार का पालना करने के लिए मजदूरी करेंगे जिस में उनकी पत्नी भी उनका साथ देयेंगी। पर वे दोनों का यह भी कहना सत्य है की हम सिर्फ रोजगार गारन्टी के भरोसें नहीं रह पाएंगे, इसलिय जैसे ही मुंबई महानगरी खुलेगी और कोरोना का डर निकलेगा हम अपनों के लिए पैसे कामनें फिर वापस चले जायेंगे।

कोरोना में सावधानी ही है बचाव

आपस में कम से कम एक मीटर की दुरी

अपने हाथों को साबुन और पानी से बार बार धोएं

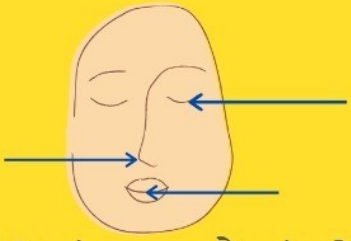

अपनी आंख नाक और मुंह को छूने से पहले हाथों को धो लें

मास्क या गमछा का उपयोग नियमित करें

बुज़ुर्गों व बच्चों के बचाव पर दें विशेष ध्यान

सर्दी खांसी हो तो डॉक्टर को दिखाने में संकोच न करें

सार्वजानिक स्थान पर न थूकें

एकता परिषद

www.ektaparishadindia.org

एकता परिषद्, संसाधन केन्द्र, पुरानी छावनी थाने के पास, ए.बी. रोड पुरानी छावनी ग्वालियर, सम्पर्क - 9993592425
Contact Persons : Ran Singh Parmar 9993592425, Email: mgsa.india@gmail.com ,
www.mahatmagandhisevaashram.org, www.ektaparishad.org